<u>उत्तराखण्ड राज्य भूवैज्ञानिक कार्यक्रयी परिषद् (एस0जी0पी0बी0) की दिनांक 27.11.2018 को आहूत बैठक का कार्यवृत्त</u>

उत्तराखण्ड राज्य भूवैज्ञानिक कार्यक्रयी परिषद् (एस0जी0पी0बी0) की बैठक दिनांक 27.11.2018 को डॉ0 जॉय गोपाल घोष, उपमहानिदेशक महोदय की अध्यक्षता में की गयी।

<u>बैठक में निम्नलिखित अधिकारियों द्वारा प्रतिभाग किया गयाः–</u>

1. डॉ0 जॉय गोपाल घोष, उपमहानिदेशक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, देहरादून।
2. श्री भूपेन्द्र सिंह, निदेशक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, देहरादून।
3. श्री अनिल कुमार, संयुक्त निदेशक, भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड, देहरादून।
4. डॉ0 दीपक हटवाल, उप निदेशक, भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड, देहरादून।
5. श्री डी0एन0फुलजेले, वरिष्ठ भूवैज्ञानिक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, देहरादून।
6. श्री सेबाब्रत दास, वरिष्ठ भूवैज्ञानिक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, देहरादून।

<u>एजेन्डा बिन्दु संख्या 01</u>:–*भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड द्वारा भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण पोर्टल से 103 खनिज अन्वेषण आख्यायें जिनमें से 57 मैटेलिक व 46 नॉन मैटेलिक श्रेणी के अन्तर्गत है के मानचित्र एवं सैक्शन पोर्टल पर उपलब्ध न होने पर उक्त की उपलब्धता के सम्बन्ध में भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण से किये गये अनुरोध पर भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा 70 मिनरल इन्वेस्टीगेशन रिपोर्ट का डाटा (लगभग 52 जी0बी0) सॉफ्ट कॉपी में उपलब्ध कराया गया, जिसमें 68 मिनरल इन्वेस्टीगेशन रिपोर्ट सूची के अनुसार पायी गयी तथा अवशेष 02 आख्याओं में एक जम्मू एवं कश्मीर एवं दूसरी आख्या,* ***Note on the Geology and Mineral resources in Parts of South Garhwal, U.P.*** *से सम्बन्धित है। शेष मेटेलिक श्रेणी की 15 आख्याऐं एवं नॉन–मेटेलिक श्रेणी की 20 आख्याऐं ,कुल 35 आख्याऐं, के मानचित्र व सैक्शन उपलब्ध कराये जाने के सम्बन्ध में जी.एस.आई. लखनऊ को अनुरोध पत्र प्रेषित किया गया था। जी.एस.आई., द्वारा 31 आख्यायें उपलब्ध करायी गयी हैं परन्तु आख्याओं के साथ मानचित्र उपलब्ध नहीं कराये गये हैं। शेष 04 आख्यायें, पूर्व में प्रेषित दो अन्य राज्यों की आख्याओं के सापेक्ष 02 आख्यायें व 01 अन्तिम आख्या के स्थान पर उपलब्ध करायी गयी प्रारम्भिक आख्या की अवशेष 01 आख्या व इस प्रकार कुल 07 आख्यायें जिनकी सूची कार्यालय द्वारा जी0एस0आई0 को प्रेषित है, मानचित्र व अभिलेखों सहित वांछित है।*
इस प्रकार उपलब्ध करायी गयी 31 आख्याओं के मानचित्र व अभिलेख तथा उपरोक्तानुसार अवशेष 07 आख्यायें उनके मानचित्र व अभिलेख उपलब्ध कराये जाने का अनुरोध है।

भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड से प्राप्त पत्र के अनुसार भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, रा.इः उत्तराखण्ड द्वारा अवशेष 07 आख्यायें उनके मानचित्र व अभिलेख समेत उपलब्ध कराये जाने हेतु पत्र भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, उत्तरी क्षेत्र, लखनऊ (क्षेत्रीय मुख्यालय) में भेज दिया गया हैं। 07 आख्यायें उनके मानचित्र समेत भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, क्षेत्रीय मुख्यालय से प्राप्त हाने के पश्चात भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड को भेजा जाएगा। साथ ही 31 आख्यायों जिनके मानचित्र वॅाछित हैं कि सूची भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड द्वारा भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण को उपलब्ध कराई जाएगी।

<u>एजेन्डा बिन्दु संख्या 02</u>:–*भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड द्वारा से उत्तराखण्ड राज्य के अन्तर्गत खनिज अन्वेषण किये गये क्षेत्रों की पोर्टल पर उपलब्ध 103 खनिज अन्वेषण आख्याओं का यू0एन0एफ0सी0 (UNFC) वर्गीकरण किये जाने का अनुरोध किया गया था। जिसके सापेक्ष जी0एस0आई0 द्वारा 101 यू0एन0एफ0सी0 वर्गीकरण आख्यायें उपलब्ध करायी गयी हैं जिनमें से 27 आख्यायें अतिरिक्त रूप से उपलब्ध करायी गयी हैं जो वांछित 103 के अतिरिक्त हैं। इस प्रकार 103 के सापेक्ष उपलब्ध करायी गयी 74 आख्याओं की यू0एन0एफ0सी0 प्राप्त हो चुकी है तथा शेष 29 खनिज आख्याओं की यू0एन0एफ0सी0 उपलब्ध करायी जानी है।*

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा अवगत कराया कि भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई द्वारा प्राप्त सूची भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, उत्तरी क्षेत्र, लखनऊ में भेजी गयी हैं। यू0एन0एफ0सी0 वर्गीकरण प्राप्त हाने के पश्चात शीघ्र अतिशीघ्र भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड को उपलब्ध कराया जाएगा।

<u>एजेन्डा बिन्दु संख्या 03</u>:–*तत्कालीन राज्य उत्तर प्रदेश के कार्यकाल में वर्ष 1992 से 1997 के मध्य भूतत्व एवं खनिकर्म निदेशालय, लखनऊ द्वारा जनपद देहरादून, तहसील चकराता के सुनेरखेडा क्षेत्र के अन्तर्गत घेन्सूरखेडा ब्लॉक में चूनापत्थर खनिज का विस्तृत अन्वेषण कार्य किया गया है। अन्य ब्लॉक में चूना पत्थर हेतु अन्वेषण कार्य किया जाना है। पूर्ववर्ती राज्य के भूतत्व एवं खनिकर्म निदेशालय, उत्तर प्रदेश द्वारा पूर्व में किये गये चूना पत्थर खनिज अन्वेषण की आख्या भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण को उपलब्ध करायी गयी है। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग, देहरादून तथा भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, देहरादून द्वारा उक्त क्षेत्र का क्षेत्रीय भ्रमण कर लिया गया है। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण से घेन्सूरखेडा के निकट अन्य ब्लॉकों में चूना पत्थर के खनिज अन्वेषण संबंधी कार्यक्रम को सम्मिलित किये जाने का अनुरोध है।*

अध्यक्ष महोदय ने सुझाव दिया कि घेन्सूरखेडा एवं निकटवर्ती ब्लॉको में संयुक्त क्षेत्रीय भ्रमण कर चूनापत्थर के नमुने एकत्रित किए जाएंगे जिन्हे भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण की प्रयोगशाला में रासायनिक विश्लेषण हेतु भेजा जाएगा। नमुनो से प्राप्त रिज़ल्ट के आधार पर भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग द्वारा अग्रेत्तर कार्यवाही की जाएगी।

<u>एजेन्डा बिन्दु संख्या 04</u>:–*भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा वर्ष 1989–1997 में जनपद देहरादून के सटंगधार के अन्तर्गत सिलिका सैण्ड बैंड को अन्वेषित किया गया है। उक्त बैड के अतिरिक्त अन्य दो ब्लॉक पुरोला–घमनधार एवं माल्पा का डांडा–चतराधार, जनपद उत्तरकाशी में वन भूमि से पृथक राज्य सरकार व निजी नाप भूमि के अन्तर्गत सिलिका सैंड का अन्वेषण किया जाना प्रस्तावित है।*

इस संदर्भ में भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड द्वारा कार्यवाही की जा रही हैं। आवश्यकतानुसार भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

<u>एजेन्डा बिन्दु संख्या 05</u>:–*भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई द्वारा जनपद बागेश्वर में निजी नाप भूमि व वन भूमि से भिन्न राज्य सरकार की भूमि में सोपस्टोन खनिज की उपलब्धता के क्षेत्रों का चिन्हीकरण किये जाने हेतु प्रारम्भिक स्तर का भूगर्भीय अन्वेषण कार्य किया जाना प्रस्तावित है।*

इस संदर्भ में भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड द्वारा कार्यावाही की जा रही हैं। आवश्यकतानुसार भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा तत्कालीन DGM UP द्वारा किए गए सोपस्टोन से संबंधित आख्या उपलब्ध कराने हेतु कहा गया जिसका उपयोग Larger Hydrothermal System की जॉचे हेतु किया जाएगा। भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई द्वारा उक्त से संबंधित आख्यॅाए शीघ्र उपलब्ध कराए जाने का आश्वासन दिया गया।

<u>एजेन्डा बिन्दु संख्या 06</u>:–*भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा जनपद उत्तरकाशी के आपदाग्रस्त ग्रामों की भूवैज्ञानिक निरीक्षण आख्या में किये गये उल्लेख के क्रम में भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण से ग्राम भटवाडी तथा ग्राम अस्थल के टेरेन की मकेनिकल प्रोपर्टीज का आंकलन किया जाना प्रस्तावित है।*

जनपद उत्तरकाशी के आपदाग्रस्त ग्राम भटवाडी के चिन्हित पुनर्वास स्थल (दामक नामेतोक) का विस्तृत अध्ययन भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा कार्यसत्र 2019–20 में किया जाएगा। यह भी निर्णय लिया गया कि अस्थल ग्राम के दो चिन्हित पुनर्वास स्थलो का भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा प्रारभिक ऑकलन कर तदानुसार निर्णय लिया जाएगा।

<u>एजेन्डा बिन्दु संख्या 07</u>:–*भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड द्वारा उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न भूस्खलन प्रभावित क्षेत्रों का भूगर्भीय सर्वेक्षण तथा आपदाग्रस्त ग्रामों के विस्थापन एव पुनर्वास स्थलों का भूगर्भीय अन्वेषण कार्य सम्पन्न किया जा रहा है। भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड द्वारा भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के साथ संयुक्त रूप से कतिपय आपदाग्रस्त ग्रामों, जिनकी सूची भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, राज्य इकाई उत्तराखण्ड को उपलब्ध करा दी गई हैं।*

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा अवगत कराया गया कि भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई, उत्तराखण्ड द्वारा प्राप्त आपदाग्रस्त ग्रामों से संबंधित भूतकनीकी सर्वेक्षण का कार्य गतिमान हैं।

<u>एजेन्डा बिन्दु संख्या 08</u>:–*राज्य के अन्तर्गत विकास सम्बन्धी विभिन्न निर्माण कार्य किये जाने हेतु भूतत्व एवं खनिकर्म इकाई द्वारा प्रस्तावित क्षेत्रों का भूअभियांत्रिकी निरीक्षण किये जा रहें है। उक्त कार्य पूर्ववत किया जायेगा।*

उक्त कार्य पूर्वत किए जाने पर सहमती व्यक्त कि गई।

<u>एजेन्डा बिन्दु संख्या 09</u>:–*अन्य सम्बन्धित विचारणीय बिन्दु।*

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा अवगत किया गया कि तत्कालीन DGM उत्तर–प्रदेश द्वारा उत्तराखण्ड राज्य के Jakheta, Manyoli, Punakot, Rita, Koerali, Pharik, Barakham, Darpani क्षेत्रो में 80 के दशक में Scheelite mineralization से संबंधित कार्य किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार Scheelite बेल्ट रानीखेत एवं देवलखाल के बीच लगभग 50–55 कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत हैं। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा DGM उत्तर प्रदेश द्वारा किए गए कार्यो से संबंधित आख्यॅा उपलब्ध कराने हेतु अनुरोध किया गया जिससे इन क्षेत्रो का आधुनिक तकनीक से पुर्नआंकलन किया जा सकें। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा उक्त से संबंधित आख्या की जानकारी तत्कालीन राज्य उत्तर–प्रदेश से प्राप्त कर आख्या उपलब्ध होने पर उपलब्ध कराए जाने का आश्वासन दिया गया।